बचपन मनुष्य जीवन का हीरे तुल्य समय है, जिसमें मनुष्य सभी चिन्ताओं से मुक्त रहकर जीवनमुक्ति का अनुभव करता है। परन्तु इसी अल्प आयु में वह बहुत कुछ सीख भी लेता है क्योंकि उसकी ग्रहण शक्ति तीव्र होती है। ग्रहण शक्ति मनुष्य की तब ही तीव्र होती है जब उसका मन शान्त हो और बचपन में यह मन अपेक्षाकृत ज्यादा शान्त रहता है। छोटे बच्चे जो कुछ देखते हैं, सुनते हैं वह सीखते जाते हैं। यहाँ तक कि हमारे अंदर जैसा वातावरण है उससे भी वे बहुत कुछ सीखते हैं। माता-पिता, बच्चों के प्रथम गुरु हैं। माँ के विचारों व संस्कारों का गर्भकाल के दौरान भी बच्चों पर प्रभाव पड़ता है। यदि घर में माँ-बाप के बीच में कोई तनाव है तो उसका असर भी बच्चे पर पड़ता है। वे चाहें तो बच्चे को चरित्रवान व बुद्धिवान बना सकते हैं। माँ-बाप ध्यान दें तो बच्चों की बुद्धि का समुचित विकास हो सकता है।

आजकल चारों ओर दूषित वातावरण है। हमारे चारों ओर निगेटीव एनर्जी ज्यादा है। परिणाम स्वरुप बच्चे निगेटीव बातों को ज्यादा ग्रहण करते हैं। अच्छी बातें उन्हें अच्छी नहीं लगती। जिन बच्चों के विचार अच्छे होंगे वे अच्छी बातें ज्यादा ग्रहण करेंगे और वातावरण से पॉजिटीव एनर्जी ग्रहण करेंगे। परन्तु जिन बच्चों के विचार दूषित है, वे बुरी बातें ज्यादा सीखेंगे व वातावरण से निगेटीव एनर्जी ही ग्रहण करेंगे।

बच्चों की बुद्धि का विकास इन दो बातों पर मुख्य रुप से आधारित है कि एक तो उनका मन कितना शान्त है, दूसरा वे वातावरण से क्या ग्रहण करते हैं। परन्तु आज बच्चों के मन को भटकाने व उसे निगेटीव बनाने के साधन घर-घर में उपस्थित है। टी.वी., इन्टरनेट, मोबाइल तथा लैपटाप इसमें मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। जहां इन साधनों से फायदा है, वहां नुकसान भी बहुत है इसलिए इनके प्रयोग में संयम बरतना चाहिए।

जो बच्चे टी.वी.या कम्प्यूटर पर चार घण्टे लगाते हैं, उन्हें शारीरिक बीमारियाँ तो पकड़ेंगी ही, साथ ही मस्तिष्क की एकाग्रता की शक्ति भी नष्ट होगी। यदि कोई बच्चा इस तरह लम्बा समय इन पर समय व्यतीत करता है तो कुछ ही वर्ष में उसे ब्रेन की अक्षमताओं का अनुभव होने लगेगा। उनकी स्मरणशक्ति क्षीण पड़ जाएगी और वे पढ़ाई में ज्यादा एकाग्र भी नहीं हो सकेंगे। इसलिए माँ-बाप का काम है कि वे अबोध बच्चों को इस सत्य का एहसास करायें, ताकि उज्जवल भविष्य की ओर देखने वाले बच्चे सावधान हो सकें।

इन्टरनेट पर मिलने वाली विभिन्न जानकारियां बच्चों की बुद्धि को भ्रमित कर रही हैं। भ्रमित मन होने से मनुष्य अनिद्रा का शिकार हो जाता है और इससे पूरे परिवार को कष्ट होता है। अनेक तरह की इन्फार्मेशन मिलने से मस्तिष्क भ्रमित होकर अपनी शक्तियाँ खोने लगता है, साथ ही साथ इससे बच्चों को लक्ष्य से भटकने की गुंजाइश भी रहती हैं।

शरीर को तथा मस्तिष्क को स्वस्थ बनाये रखने के लिए हर बात के संतुलन की आवश्यकता है। सारा ही दिन पढ़ाई करते रहना भी कल्याणकारी नहीं है, थोड़ा मनोरंजन, थोड़ा खेलकूद, व्यायाम, अच्छा भोजन व कुछ समय मित्रों के साथ व्यतीत करना भी जरूरी है।

बच्चों को चाहिए कि वे तनाव से मुक्त रहें। किसी भी तरह का तनाव बौद्धिक क्षमता को क्षीण करता है, स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है। इसलिए न तो पढ़ाई का तनाव रखना चाहिए और न मित्रों के बीच में तनाव रखना चाहिए। बच्चे जितने खुश रहेंगे, उतना ही उनका चहुँमुखी विकास होगा। तनाव में रहना या न रहना यह अपने हाथ में है। अपनी नेचर को ऐसा बनायें कि हर बात खेल की तरह लगे। यदि तनाव हो भी जाए तो उसे जल्दी से जल्दी खत्म कर देना चाहिए।

प्रत्येक घर में माँ-बाप को चाहिए कि वे टी.वी. आदि के समय को नियंत्रित करें। परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि घर में माताएं-बहनें या बुजुर्ग सारा ही दिन टी.वी. न खोले रखें। इससे कई नुकसान होंगे। जिस घर में सारा दिन आवाज रहती हो वहां कानों के रोग भी पैदा होंगे, हर मनुष्य की स्मरण शक्ति भी क्षीण होगी, बच्चों की बुद्धि का विकास रूक जायेगा और टीवी से निकलने वाली तरंगें भी कई बीमारियों को जन्म देंगी।

माताएं यदि टीवी देखते हुए भोजन बनायेंगी तो भोजन में अच्छे वायब्रेशन्स नहीं भरेंगे। इसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा, भोजन अति प्रेम से, अच्छे विचारों में तथा परमात्मा की याद में ही बनाना चाहिए। यदि माताएं ही टी.वी. को बंद रखेंगी तो बच्चे भी ज्यादा नहीं देखेंगे।

बच्चों को यह जानना चाहिए कि यदि वे सारा दिन इन्टरनेट पर बैठे रहते हैं तो उनमें सामाजिक गुण विकसित नहीं होंगे। अर्थात वे दूसरों के साथ रहने का तरीका नहीं सीख पायेंगे। एक दिन उन्हें जीवन में अधूरेपन का आभास होगा।

तो प्यारे बच्चों, आओ आज से अपने विचारों को महान व सुंदर बनाने का लक्ष्य बनायें। ये जीवन प्रभु की सुंदर सौगात है, हमें इसे और सुंदर बनाना है। जीवन एक लम्बी यात्रा भी है। इस यात्रा को हमें सुखी व संतोषजनक बनाना है। आपको एक सुनहरे भविष्य की ओर देखना है। इसलिए चाहे आप छोटे हैं तो भी आपको अच्छी बातें सीखनी हैं व बुराइयों व लड़ाई-झगड़े को छोड़ देना है। आप अपने जीवन में सद्गुणों के हीरे-मोती जड़ दो तो ये जीवन चमक जायेगा।

भगवान ने खोला है अनोखा बैंक

एक ऐसा बैंक भी विश्व में खुला है जिसमें पद्मगुणा ब्याज मिलेगा। मालूम है किसका है ये बैंक? स्वयं भाग्य विधाता ने खोला है ये बैंक। इसमें शर्त यही है कि इसमें अब ही कुछ वर्ष तक जमा किया जा सकता है फिर जमा करने हेतु यह बैंक बंद हो जाएगा। तो आइये आप भी अपना खाता खोलिए इस अलौकिक बैंक में।

इस बैंक में धन भी जमा होता है, परन्तु यह अलौकिक बैंक हैं और इसका मालिक स्वयं भगवान है, इसलिए मूलत: इसमें सूक्ष्म खजाने ही जमा होते हैं। वे खजाने मुख्य रुप से नौ हैं इसलिए भारत में नव निधियों का गायन भी है। वे हैं -ज्ञान का खजाना, गुणों का खजाना, शक्तियों का खजाना, खुशी का खजाना, समय का खजाना, संकल्पों का खजाना, पवित्रता (सुख-शान्ति) का खजाना, दुवाओं का खजाना व पुण्य कर्मों का खजाना।

ये सर्व अलौकिक खजाने केवल पुरूषोत्तम संगमयुग पर ही जमा किये जा सकते हैं, बाकी तो पहले दो युग इनकी प्रारब्ध चलेगी व अन्य दो युग इन्हीं संस्कारों का सम्पूर्ण प्रभाव जीवन पर रहेगा। मूलत: निमित्त भाव से व निरहंकारिता से ये खजाने बढ़ते हैं क्योंकि निमित्त भाव धारण होते ही, ईश्वरीय शक्तियां व सहयोग मिलने लगता है। यदि कोई मनुष्य बड़ा ज्ञानी, योगी भी है, सेवा में भी सब कुछ लगाता हो, परन्तु निमित्त भाव न हो, मैं-पन हो या अभिमान रहता हो तो उसे खुशी भी नहीं रहेगी, वह टकराव में या अन्य बातों में भी उलझा रहेगा व उसका प्रभाव भी दूसरों पर नहीं होगा।

तो आईये, इस अनोखे बैंक में तीन खाते खोलें...प्रथम -श्रेष्ठ पुरुषार्थ का खाता। सम्पूर्ण श्रीमत पर चलकर अनेक खजाने जमा करते रहें।

शेष पेज 11पर..

फिरोजपुर सिटी। हाके वाला अच्छे वाला गांव में पंडित श्रीधज से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.तृप्ता।

होल्कर। दीप प्रज्ज्वलित करते हुए शिवलिंगनन्द स्वामी, पी.आर.शिवकुमार, ब्र.कु.बसवराज, ब्र.कु.सुमित्र बहन तथा अन्य।

सोनपेठ, सोलापूर। पं.पु.सद्गुरु श्री भय्युजी महाराज से आध्यात्मिक चर्चा करने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.मीरा बहन।

पेठ वडगाव (कोल्हापुर)। महिला कल्याण मंच की अध्यक्षा एवं नगर सेविका विद्या ताई पोल को मोमेन्टो प्रदान करते हुए ब्र.कु.सुनंदा बहन।

पोखरा। 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं डी.आई.जी.राजेन्द्र सिंह भण्डारी, डी.आई.जी.प्रेम कुमार शाही, एस.पी.शंभू उप्रेती, क्षेत्रिय संचालिका ब्र.कु.परिणीता तथा अन्य।

कटनी। महापौर निर्मला पाठक को परमात्म अवतरण का संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.भगवती बहन।